अमिया भी जानती थी कि डाँट पड़ेगी

प्रभात

अमिया की माँ ने मिट्टी की एक कूलड़ी बनाई। नन्हे-मुन्ने घड़े सरीखी कूलड़ी के लिए एक सुन्दर-सा ढक्कन भी बनाया। कूलड़ी पर सुन्दर रंग-बिरंगे फूल भी बनाए। अमिया के कहने पर माँ ने नीले फूल ज़्यादा बनाए।

"इसे हम टीवी के ऊपर रखेंगे।" अमिया ने कहा। फिर कुछ देर सोचते हुए पूछा, "मगर इसमें रखेंगे क्या?"

"बटन, सुई, धागा, सिक्के, कौड़ी जैसी छोटी-छोटी चीज़ें रख लिया करेंगे।" माँ ने बताया।

"दूध के हिसाब की पर्ची भी इसमें रख सकते हैं।" अमिया ने सुझाव दिया।

एक दिन कूलड़ी पर एक रुपए का सिक्का चमक रहा था। खेलते समय भी अमिया की आँखों में वो चमकता रहा। अमिया खेल रही थी मगर सिक्का कभी गुब्बारा बनकर, कभी खाने की चीज़ बनकर उसकी आँखों के सामने नाचता रहा।

शाम को अमिया को ज़ोरदार डाँट पड़ी। वो भी जानती थी कि डाँट पड़ेगी।

"कूलड़ी पर से रुपया तूने लिया था कि नहीं? झूठ बोलती है? फिर कहाँ गया वह रुपया? गोलू ने तुझे चीज़ खाते भी देखा था। कहाँ से आए तेरे पास पैसे?" माँ ने सवालों की झड़ी लगा दी।

अमिया का एक ही जवाब था, "मैंने कूलड़ी पर से रुपया नहीं लिया।"

"आने दे तेरे पापा को। तेरी पिटाई नहीं बनवाई तो देखना आज।" माँ ने तड़ी दी।

अमिया पापा की पूछताछ के डर से रात आठ बजे ही सो गई। सुबह पापा के जागने से पहले ही स्कूल के लिए रवाना हो गई।

इधर माँ ने पापा को सारी बात बता दी। अमिया को पिटाई न करके समझाया जाए ऐसा सुझाव दिया।

चित्र: ललित अग्रोड़ा

अमिया स्कूल से आई तो माँ ने पापा को याद दिलाया। "पूछो इससे, रुपया किसने लिया?"

"मैंने कूलड़ी पर से रुपया नहीं लिया।" अमिया का फिर वही जवाब था।

"तो फिर कहाँ गया वो?" माँ बमक गई।

"मुझे क्या मालूम।" अमिया ने कहा।

"तेरे चेहरे पर साफ लिखा है अमिया, रुपया तो तूने ही लिया है?" पापा ने कहा।

"मगर पापा मैंने कूलड़ी पर से रुपया नहीं लिया।" अमिया बहस में बनी रही।

"तो फिर?" पापा ने पूछा।

"मैंने कूलड़ी के अन्दर से एक रुपया लिया था। मुझे क्या मालूम कूलड़ी पर रखा रुपया किसने लिया।" अमिया को लग रहा था कि इस बारीक से अन्तर को समझने में इन्हें इतनी मुश्किल क्यों हो रही है।

"तो बेटी तुमने बताया क्यों नहीं कि रुपया तुमने लिया है?" पापा ने समझाइश की।

"तो पापा, मम्मी तो पूछ रही थी कूलड़ी पर से रुपया किसने लिया? ऐसे थोड़ी पूछ रही थी कि कूलड़ी के अन्दर से रुपया किसने लिया। ऐसे पूछती तो क्या मैं बताती नहीं?"

ऐसा कहकर अमिया चुप नहीं हुई। वह कहती जा रही थी, "पहले तो ऐसे पूछते नहीं कि कूलड़ी में से रुपया किसने लिया। ऊपर से दोनों मिलकर डाँटते और हैं। आने दो भाया (बाबा) को मैं उनके साथ गाँव चली जाऊँगी। भाया तो खुद ही पैसे भी देते हैं और डाँटते भी नहीं है।"

अमिया एक कोने में जाकर बैठ गई। और अपने भाया को याद करने लगी जो गाँव में अकेले रहते हैं।